मेयराज हुआ महंमद पर, सो लई सब हकीकत।
हुए इलमें अर्स दिल औलियों, ऊगी बका हक सूरत।।९४।।

रसूल साहब को मेयराज हुआ (दर्शन हुआ) और उन्होंने परमधाम की हकीकत बताई। जिनके दिल को खुदा का अर्श कहा है, उन मोमिनों ने कुलजम सरूप की वाणी से ग्रहण किया और अखण्ड परमधाम तथा श्री राजजी के स्वरूप पर ईमान लाए।

अब देखसी सब नजरों, दोऊ झण्डों करी पुकार।
बातून झण्डा नूर का, पोहोंच्या बिलंद नूर पार।।९५।।

अब सारी दुनियां के लोग इस बात को समझेंगे, क्योंकि शरीयत का झण्डा रसूल साहब की कुरान, मारफत का झण्डा कुलजम सरूप साहब की वाणी पुकार कर रही है। यही बातूनी ज्ञान का झण्डा है जो अक्षर के पार परमधाम तक पहुंचाता है।

दुनी जाहेरी झण्डे की, तिन पांउं कटाए पुल–सरात।
लई ना हक हकीकत, और वजूदें चल्या न जात।।९६।।

दुनियां जाहिरी झण्डों को लेकर चल रही है, इसलिए शरीयत (कर्मकाण्ड) के रास्ते में उनके पैर कट जाते हैं और शरीर से चला नहीं जाता, क्योंकि उन्होंने पारब्रह्म के हकीकत के ज्ञान को नहीं लिया।

महामत कहे ए मोमिनों, हादिएं खोले कयामत निसान।
हक अर्स बका जाहेर हुए, फरिस्ते नूरै नूर किया जहान।।९७।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने कयामत के सभी निशान जाहिर कर दिए हैं। अब उनके ज्ञान से अखण्ड परमधाम श्री राजजी महाराज के स्वरूप की भी पहचान हो गई। इनके साथ आए असराफील फरिश्ते ने सारे संसार में जागृत बुद्धि के ज्ञान को फैला दिया।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ६८५ ॥

झंडा हकीकी खड़ा हुआ हिन्दमें

जाए इलम पोहोंच्या हक का, ताए हुई हक हिदायत।
सो आया फिरके नाजी मिने, झण्डा दीन हकीकी जित।।१।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जिसको श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि का ज्ञान मिल गया, उसे श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान हो गई। वही (नाजी फिरका) निजानन्द सम्प्रदाय में आ गया। वही श्री पद्मावतीपुरी जहां हकीकी झण्डा खड़ा किया, उसके तले आ गया (अनुयायी कहलाया)।

लिखी कुरानमें हकीकत, होसी खोले एक दीन।
जब ऊग्या सूर मारफत का, आवसी देख सबों आकीन।।२।।

कुरान में लिखा है कि जब इसकी हकीकत के रहस्य खुल जाएंगे, तब सब एक दीन, एक पारब्रह्म के पूजक हो जाएंगे। जब जागृत बुद्धि के ज्ञान का सूर्य तारतम वाणी (कुलजम सरूप) आएगी तो उसे पहचानकर सबको पारब्रह्म पर यकीन आ जाएगा।

Nijanand App

दीदार हुआ हक सूरत का, देख अर्स नजर बातन।
न्यामत असोंकी सबे, लई अर्स दिल मोमिन।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप का सभी को दर्शन हुआ। तब परमधाम को देखकर बातूनी बातें समझ में आएंगी। उस समय मोमिनों को जिनके दिल को अर्श किया है, क्षर, अक्षर और अक्षरातीत के अर्शों की पहचान हो जाएगी।

कहे आयतें हदीसें जाहेर, नूर झण्डा महंमदी जे।
दिन दिन घड़ी घड़ी पल पल, नूर बढताई देखोगे।। ४ ।।

कुरान की आयतों और मुहम्मद साहब की हदीस में स्पष्ट लिखा है कि जागृत बुद्धि के ज्ञान का नूरी झण्डा जो इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने खड़ा किया है, उसका तेज दिन-दिन, घड़ी-घड़ी और पल-पल बढ़ता ही रहेगा।

महंमद नूर है हक का, कुल सैयन महंमद नूर।
इन झण्डे कौल महंमद के, आखिर किया चाहिए जहूर।। ५ ।।

मुहम्मद (श्री श्यामाजी) श्री राजजी महाराज के नूरी अंग हैं। सभी रूहें (सखियां) श्री श्यामाजी महारानी के नूरी अंग हैं। इन श्री श्यामाजी महारानी से श्री राजजी महाराज ने परमधाम में वायदा किया था कि मैं ग्यारहवीं सदी में इमाम मेंहेंदी बनकर आऊंगा और नूरी झंडे के तले सबको जागृत बुद्धि का ज्ञान दूंगा।

लैलत कदर बीच मोमिनों, आए खोली रूह नजर।
हक इलम ले रूहअल्ला, करी इमामें फजर।। ६ ।।

लैल तुल कदर की रात्रि में मोमिन आए। श्री राजजी महाराज ने आकर जागृत बुद्धि के ज्ञान से उनकी आत्मदृष्टि खोली। पहले इस तारतम ज्ञान को लेकर श्री श्यामाजी महारानी आईं। फिर इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने आकर ज्ञान से अन्धकार मिटाकर सवेरा कर दिया।

जब लिया माएना बातून, रूह नजर खुली तब।
दिन मारफत हुआ आलम में, नूर रोसन किया अब।। ७ ।।

जब कुरान के बातूनी अर्थ समझ में आए, तब आत्मा की दृष्टि खुल गई। सारे संसार में अब मारफत के ज्ञान का सूर्य उदय हो गया।

तब सबोंने देखिया, जो कछू हक बिसात।
हक खिलवत जाहेर हुई, अर्स बका हक जात।। ८ ।।

तब मारफत का ज्ञान मिलने से सबको परमधाम की सभी न्यामतों की पहचान हो गई। तब श्री राजजी महाराज के मूल-मिलावा की बातें सबको जाहिर हो गईं और अखण्ड घर परमधाम तथा मोमिनों की पहचान हो गई।

फुरमाया सब हो चुक्या, मिले सब निसान।
हादी करसी जाहेर, खोल माएने मगज कुरान।। ९ ।।

कुरान में जो लिखा था वह सब जाहिर हो गया। आखिरत के सब निशानों के भेद खुल गए। अब इमाम मेहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज कुरान के इन सारे भेदों को खोलकर संसार में रोशनी करेंगे।

Nijanand App

झंडा नूरका महंमदी, ताए कबूं न होए नुकसान।
जेते दिन जित फुरमाया, रह्या तेते दिन तित ईमान।। १० ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने जो नूरी झण्डा कायम किया है उसकी कभी भी हानि नहीं होगी, अर्थात् कभी नीचा नहीं होगा। जितने दिन तक जहां जिस लीला को होना लिखा था, उतने दिन तक वहां ईमान रहा (मक्का से ईमान उठ गया)।

और ठौर हुकमें खड़ा किया, सो जाए लग्या नूर आसमान।
जो एक ठौर कदी न देखिए, तो और ठौर बिलंद हुआ जान।। ११ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से नूरी झण्डा दूसरी जगह खड़ा किया (मक्का से उठाकर पन्नाजी में खड़ा किया)। अब इस झण्डे का नूर जागृत बुद्धि का ज्ञान सारे ब्रह्माण्ड में फैल रहा है। यदि एक जगह उसका प्रचार, प्रसार न दिख रहा हो तो समझना कि नूरी झण्डा कहीं और जगह विस्तार से प्रचार कर रहा है।

लिख्या जाहेर हदीसमें, नूर झण्डा निसान।
सो हदीस देखे सेंती, करसी दिल पेहेचान।। १२ ।।

मुहम्मद साहब ने हदीस में नूरी झण्डे का निशान लिखा है। उस हदीस को देखने से इस बात की पहचान हो जाती है।

अव्वल झण्डा कह्या सरीयत, जाके तले दुनी पाक होए।
जो रहे तले फुरमाए के, ताकी सिफत करे सब कोए।। १३ ।।

शुरू में मक्का में शरीयत का झण्डा लगाया, जिसके नीचे दुनियां वाले निर्मल होकर ईमान लाते थे। जो कुरान के बताए रास्ते (शरीयत) पर चले, उनकी सभी प्रशंसा करते हैं।

पर सरीयत झण्डा नासूतमें, पोहोंच्या न लग मलकूत।
पकड़े पुल-सरात ने, छोड़ ना सके नासूत।। १४ ।।

शरीयत का झण्डा मृत्युलोक में लगाया जो बैकुण्ठ तक भी नहीं पहुंचता। लोगों ने कर्मकाण्ड को पकड़ रखा है, इसलिए शरीयत से मृत्युलोक को नहीं छोड़ सके।

जो लेवे राह तरीकत, ताके फैल हाल दिल से।
सो पाक होए पोहोंचे मलकूत, फरिस्तों के अर्स में।। १५ ।।

जो तरीकत के ज्ञान से चले और दिल से अपनी करनी और रहनी बनायी, वह निर्मल होकर त्रिगुण के मकान, जो देवी देवताओं का अर्श है, वहां तक जाते हैं।

बीच चौदे तबकों, कहे सात आसमान।
कोई सुरिया उलंघ न सक्या, देखो सोलमें सिपारे बयान।। १६ ।।

चौदह तबकों के बीच सात आसमान का बयान है। उसके ऊपर सुरिया सितारा (ज्योति स्वरूप) कहते हैं, को पार करके आगे कोई नहीं जा सकता। यह हकीकत कुरान के सोलहवें सिपारे में लिखी है।

आसमान जिमी बीच फना के, हवा लग ला--मकान।
ला लग पोहोंचे तरीकत, मुसाफ हकीकत बका बयान।। १७ ।।

आसमान और जमीन के बीच की सब दुनियां निराकार तक नाशवान है। तरीकत के मानने वाले निराकार तक पहुंचते हैं। आगे कुरान की हकीकत का ज्ञान अखण्ड परमधाम की पहचान कराता है।

Nijanand App

देखो सिपारे तीसरे, होवे हकीकत सों एक दीन।
सो आन मिलाए सब हुकमें, आए तले मारफत झण्डे आकीन।। १८ ।।

कुरान के तीसरे सिपारे में लिखा है कि हकीकत के ज्ञान से दुनियां एक दीन में आएगी। अब श्री राजजी महाराज के हुकम से इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने सब निशानों को जाहिर कर दिया। अब सब मारफत के ज्ञान (जागृत बुद्धि का ज्ञान) तारतम से नूरी झण्डे पर यकीन लाए।

फुरमाया सरीयत तरीकत, किया रात बीच अमल।
ना पोहोंचे बका दिन को, बिना हकीकत अर्स असल।। १९ ।।

कुरान में लिखा है कि शरीयत और तरीकत का ज्ञान का अमल (मानने वाले) रात में ही रहा। हकीकत के ज्ञान के बिना अखण्ड परमधाम की और कयामत के दिन की पहचान नहीं हो सकती।

माएने हकीकत मुसाफ के, पावें हक के इलम।
सो पोहोंचें जबरूतमें, होए सुध हक हुकम।। २० ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान से ही कुरान की हकीकत के ज्ञान जाने जाते हैं। जिसको राजजी के हुकम से हकीकत के ज्ञान कुरान की पहचान हो जाती है, वह अक्षरधाम तक पहुंचते हैं।

गिरो फरिस्ते नजीकी, बका नूर मकान।
उतरे मलायक इत थें, सो पोहोंचसी कर पेहेचान।। २१ ।।

ईश्वरीसृष्टि अक्षरधाम में हमारे नजदीक रहती है। वह अक्षरधाम से खेल देखने उतरी। हकीकत के ज्ञान को पहचान कर अपने घर वापस पहुंचेगी।

जब हक इलमें मारफत खुली, तब देख्या बका अर्स सूर।
सो सूर हुआ सिर सबनके, बरस्या बका हक नूर।। २२ ।।

जब श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान से मारफत के भेद खुले, तब सबने अखण्ड परमधाम के जागृत बुद्धि के ज्ञान के सूर्य (कुलजम सरूप) को देखा। यही मारफत के ज्ञान का सूर्य अखण्ड परमधाम तथा श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान कराता है।

खासल खास अर्स अजीम, हक सूरत नूरजमाल।
इत हादी रूहें खिलवत, ए वाहेदत जात कमाल।। २३ ।।

परमधाम में खासलखास रूहें साक्षात् श्री राजजी महाराज तथा श्री श्यामाजी मूल-मिलावा में एकदिल होकर बैठे हैं।

इन विध झण्डा खड़ा किया, हादी मोमिनों इत आए।
औलिए अंबिए पैगंमर, गोस कुतब मिले सब धाए।। २४ ।।

इस तरह से मारफत के ज्ञान का झण्डा हादी श्री प्राणनाथजी तथा मोमिनों ने आकर श्री पन्नाजी में खड़ा किया। अब सब औलिए, अंबिए, गोस और कुतुब दौड़-दौड़कर झण्डे के नीचे आ रहे हैं।

आगूं जिन बंदगी करी, ए सोई जमाना बुजरक।
सो देखो इत हक कदमों, कोई पीछा रहे न मांहें खलक।। २५ ।।

पहले से जिन्होंने बन्दगी (तपस्या) करके यह वर मांग रखा था कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के आने पर हमको मनुष्य तन मिले, यह वही श्रेष्ठ जमाना आ गया है। अब देखो, संसार में कोई पीछे नहीं रहता। सब श्री प्राणनाथजी के चरणों में दौड़कर आ रहे हैं।

Nijanand App

अब दुनियां पीछी क्यों रहे, जब हुई हक कजाए।
हुआ सब पर हुकम महंमदी, सो सब लेसी सिर चढ़ाए।। २६ ।।

अब खुदा खुद काजी बनकर सबका न्याय कर रहे हैं। तो दुनियां पीछे कैसे रहेगी? अब श्री प्राणनाथजी के हुकम को सबने स्वीकार किया।

उठी कही जेती न्यामतें, सो आई बीच हिंदुस्तान।
जो झण्डा महंमदी नूर का, नूर रोसन ईमान।। २७ ।।

मक्का मदीने से जो न्यामतें उठ गई बताई हैं, वह सब पन्नाजी में आ गईं, जहां नूरी झण्डा श्री प्राणनाथजी ने लगाया है। अब सभी को ज्ञान मिल गया और ईमान आ गया।

बेसक मेला इत होएसी, महंमद सरा अदल।
तिन कायम करी दुनी फानी को, ले हक इलम अकल।। २८ ।।

आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के दरबार का न्याय सच्चा है। वह श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान से सारी मिटने वाली दुनियां को अखण्ड कर रहे हैं, इसलिए पन्नाजी में ही सबसे बड़ा मेला छत्तीस हजार का होगा।

जो कह्या सरा दीन महंमदी, तामें सकसुभे कोई नाहें।
सो सब सुध देवे हक बका, सकसुभे न अर्स दिल माहें।। २९ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के दीन निजानन्द सम्प्रदाय की पद्धति में किसी प्रकार का संशय नहीं है। उसी का ज्ञान अखण्ड परमधाम की पहचान कराता है, जिससे मामिनों के दिल के संशय मिट जाते हैं।

ना सक महंमद दीनमें, ना सक महंमद सरीयत।
ना सक सुंनत जमातमें, कहें यों आयतें हदीसें सूरत।। ३० ।।

श्री प्राणनाथजी के दीन निजानन्द सम्प्रदाय में और उनकी पद्धति में किसी प्रकार के संशय नहीं हैं और सुन्नत जमात मोमिनों में भी किसी प्रकार के संशय नहीं रहेंगे। ऐसा कुरान की आयतों, हदीसों और सूरतों (प्रकरणों) में लिखा है।

अब क्यों झण्डा छिपा रहे, हुआ जाहेर तजल्ला नूर।
जाहेर किया नूर अर्स का, अर्स दिल महंमद जहूर।। ३१ ।।

अब जिस जागृत बुद्धि के ज्ञान से परमधाम की पहचान हो गई है और जिसने परमधाम की सब न्यामतों को जाहिर कर दिया है, वह ज्ञान का झण्डा कैसे छिपा रहेगा? इससे श्री राज श्यामाजी की और रूहों की पूरी पहचान मिली है।

खिलवत भी जाहेर करी, जो हक पातसाही वाहेदत।
छिपी सब जाहेर हुई, जो हक दिल बीच न्यामत।। ३२ ।।

श्री राजजी महाराज की परमधाम (मूल-मिलावा) में जो साहेबी है वह जाहिर हो गई। श्री राजजी महाराज के दिल की सब छिपी बातें जाहिर हो गईं।

Nijanand App

सिपारे चौथे मिने, कही गैब हक खिलवत।
सो जाहेर करसी मोमिन, उतर के आखिरत।। ३३ ।।

कुरान के चौथे सिपारे में लिखा है कि मूल-मिलावा की छिपी बातों को मोमिन आखिरत के खेल में उतरकर जाहिर करेंगे।

हुई ढील होते फजर, वास्ते आवने हक न्यामत।
सो आया अर्स बका मता, हुआ बीच बारहीं सदी बखत।। ३४ ।।

फजर का ज्ञान (मारफत सागर) के आने में देरी इसलिए हुई कि मोमिनों के वास्ते श्री राजजी महाराज का स्वरूप, सिनगार तथा अखण्ड परमधाम के पच्चीस पक्षों का ज्ञान (खिलवत, सागर, सिनगार, परिकरमा) उतरना था, इसलिए मारफत का ज्ञान (श्री राजजी महाराज के दिल की बातें) बारहवीं सदी १७४८ में आया।

भई रोसनाई रूहअल्लाह की, सुरू दसई अग्यारहीं विस्तार।
होते सदी बीच बारहीं, आया बका मता बेसुमार।। ३५ ।।

रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी दसवीं सदी में प्रगट हुईं। ग्यारहवीं सदी में ज्ञान का पूरा विस्तार हुआ। बारहवीं सदी में अखण्ड परमधाम का पूरा ज्ञान बेशुमार मारफत सागर आ गया।

झंडा महंमदी नूर का, सो पोहोंच्या नूर बिलंद।
हुआ दिन दिल महंमद मारफत, उड़ी रात फरेबी फंद।। ३६ ।।

अब इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के नूरी झण्डे का जागृत बुद्धि का ज्ञान परमधाम तक पहुंचा और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज का दिल जो मारफत के ज्ञान से भरपूर है, उसने दुनियां के झूठे फरेबी ज्ञान को उड़ा दिया।

सिपारे उनईस में, लिखे एक ठौर बयान तीन।
ए जो देखो दिल देय के, तो दिल नकस होए आकीन।। ३७ ।।

कुरान के उन्नीसवें सिपारे में एक जगह तीन सूरतों का बयान, एक जगह एक तन में इकट्ठे होने का लिखा है। अब दिल से विचार करके देखो तो तुम्हारे दिल पर पक्का यकीन अंकित हो जाएगा।

आवे अर्स आकीन हक महंमद पर, जो देखो हकीकत मारफत।
इलम लदुन्नी हक के, होए हक हिदायत।। ३८ ।।

अब हकीकत और मारफत के ज्ञान को देखो तो तुम्हें परमधाम पर यकीन आ जाएगा। जो मुहम्मद ने कुरान में कहा है, वह सत्य है। श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान से यह सब हकीकत की पहचान हो जाएगी।

इन विध झण्डा महंमदी, खड़ा हुआ बीच हिंदुस्तान।
चौदे तबक जुलमत परे, नूर पोहोंच्या लाहूत आसमान।। ३९ ।।

इस तरह से इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज का नूरी झण्डा श्री पद्मावतीपुरी धाम पन्ना में खड़ा हुआ जो चौदह तबक के आगे, निराकार के आगे अक्षरधाम के आगे परमधाम तक पहुंचा (निराकार के पार थें तिन पार के भी पार)।

Nijanand App

महामत कहे मदीने से, लिखे खलीफों पर फुरमान।
उठी दुनी बरकत सफकत फकीरों, और कलाम अल्ला ईमान।। ४० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मदीने से इस्लाम के खलीफों ने वसीयतनामे औरगंजेब पर लिखे कि मदीने से बरकत, फकीरों के आशीर्वाद देने की शक्ति, कुरान और ईमान (नूरी झण्डा) उठ गया है।

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ७२५ ॥

झण्डा सरीयतका उठ्या

कह्या झण्डा उठ्या ईमानका, कौल किया जिन सरत।
महंमद मेंहेंदी इमाम आए, लिखे आए नामें वसीयत।। १ ।।

मदीने से वसीयतनामे लिखकर आए हैं कि रसूल साहब के बताए अनुसार इमाम मेंहेंदी ग्यारहवीं सदी में हिन्दुस्तान में प्रगट हो गए हैं, इसलिए यहां से ईमान उठ गया है।

यों हादी लिखे कर जाहेर, दिन देखाए देवें कयामत।
सो लिखे सखत सौं खाए के, सो भी वास्ते इन बखत।। २ ।।

इस तरह से रसूल साहब ने कुरान में स्पष्ट लिखा है कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी आखिर में आकर कयामत को जाहिर करेंगे। यह बात सख्त कसम खाकर वसीयतनामे में ग्यारहवीं सदी में इमाम मेंहेंदी के प्रगट होने की बात के लिए लिखा।

मेहेनत करी महंमद ने, और असहाबों यार।
झण्डा खड़ा किया दीन का, तले आई दुनी बे सुमार।। ३ ।।

रसूल साहब, उनके यार तथा अनुयायियों ने बड़ी मेहनत से शरीयत का झण्डा मदीने में खड़ा किया जिसके नीचे बेशुमार दुनियां आई।

दुनियां जो जैसी हुती, सो तिसी विध लई समझाए।
तोरा किया सिर सबन के, दई सरीयत राह चलाए।। ४ ।।

उस समय दुनियां जिन विचारों की थी, उसे उसी तरह से समझाया और सबके ऊपर हुकूमत से शरीयत का रास्ता चलाया।

अग्यारै सदी लग अमल, चल्या सरीयत का।
सो फरदा रोज सदी बारहीं, कोल पोहोंच्या फजर का।। ५ ।।

शरीयत का यह नियम ग्यारहवीं सदी तक चला। मुहम्मद साहब ने कल के दिन का वायदा किया था। वह बारहवीं सदी आ गई और वायदे के अनुसार मारफत का ज्ञान आ गया।

सो नूर झण्डा बीच हिंद के, किया खड़ा नूर इसलाम।
इत आई सब न्यामतें, और आया अल्ला कलाम।। ६ ।।

वह नूरी झण्डा मदीने से उठाकर हिन्दुस्तान के बीच पन्नाजी में खड़ा किया और निजानन्द सम्प्रदाय को जाहिर किया। (नूर इस्लाम) अब परमधाम की सब न्यामतें मदीने से उठकर पन्नाजी में आ गई और कुलजम सरूप की पूरी वाणी आ गई।

Nijanand App